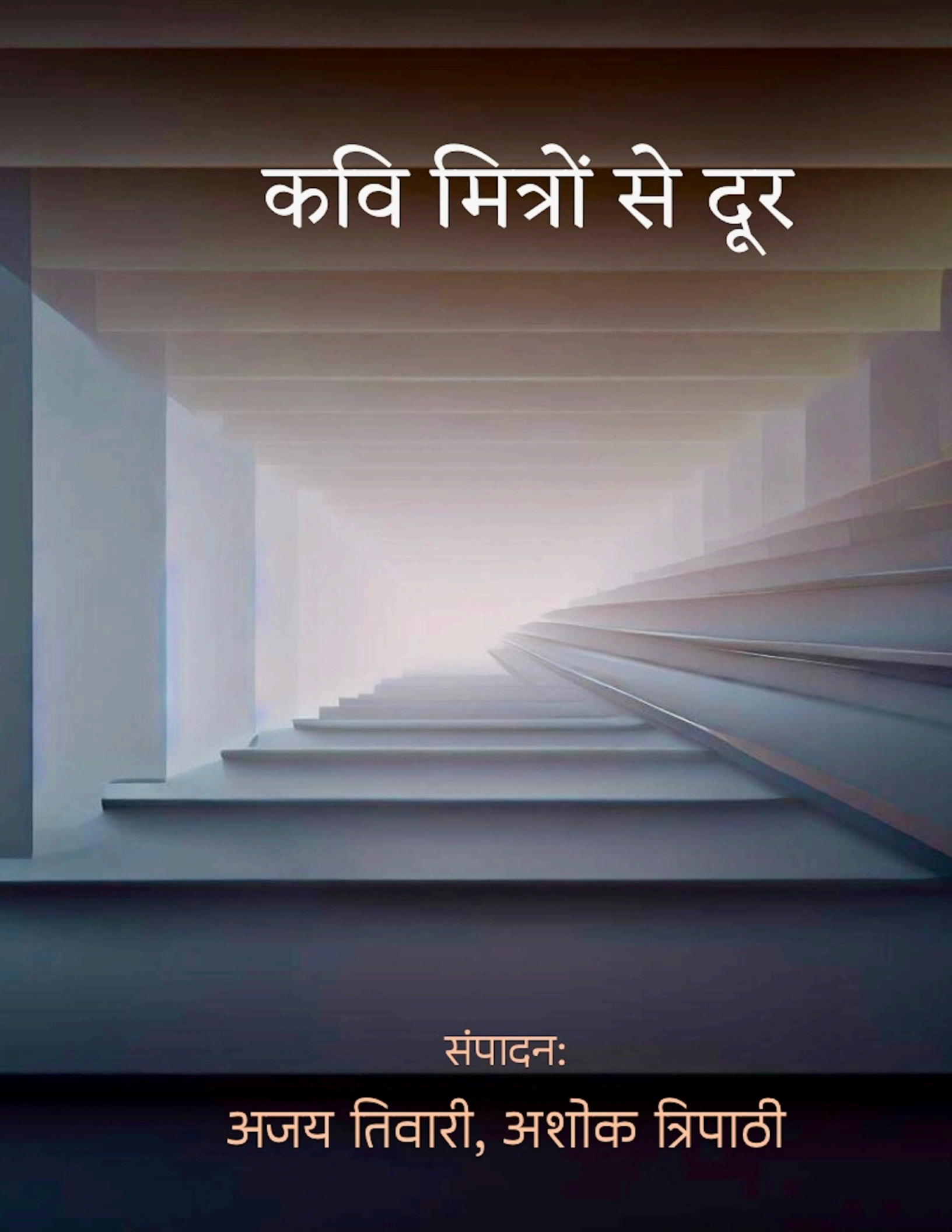
कवि मित्रों से दूर
संपादन:
अजय तिवारी, अशोक त्रिपाठी

कवि – मित्रों से दूर

केदारनाथ अग्रवाल से अजय तिवारी

अशोक त्रिपाठी और विनयशील की बातचीत

संपादन

अजय तिवारी, अशोक त्रिपाठी

अनुक्रम

कवि केदार का निर्माण	32
निराला और रामविलास शर्मा	75
संगीत और चित्रकला	87
साहित्य की समस्याएँ	95
जन आंदोलन और प्रगतिशील कविता	127
प्रगतिशील आंदोलन की समस्याएँ	153
केदार-काव्य पर बहस	184
काव्य-पाठ की तपती दुपहर	206
बाँदा के बाबूजी	223

भूमिका

'कवि-मित्रों से दूर' का परिमल प्रकाशन से निकला पहला संस्करण लगभग पंद्रह वर्षों से अप्राप्य है। एक दशक में पहला संस्करण खत्म हो गया। जबकि परिमल के स्वामी शिवकुमार सहाय की वितरण व्यवस्था में व्यावसायिक सक्षमता लगभग नहीं थी। तब 300 और 250 प्रतियों के संस्करण नहीं निकलते थे। कम से कम 1100 प्रतियाँ छपती थीं। इससे केदारनाथ अग्रवाल के साहित्य में हिंदी समाज की रुचि प्रकट होती है। इस बीच सहाय जी नहीं रहे। फिर भी देश भर के लेखकों, पाठकों, शोधार्थियों की ओर से जिज्ञासा बराबर व्यक्त होती रही।

पहला संस्करण 1986 में निकला था। बांदा में 'सम्मान : केदारनाथ अग्रवाल' के ऐतिहासिक अवसर पर। दूसरा संस्करण उनकी जन्मशती की समाप्ति के बाद आ रहा है। दोनों अवसरों में एक समानता है। तथाकथित मुख्यधारा के (वास्तव में सत्ता-संस्कृति के) बुद्धिजीवियों द्वारा केदार-साहित्य के प्रति उपेक्षा का रुख। केदार अपनी सहजता बल्कि सरलता के लिए जाने जाते है। सहजता भी निर्विवाद गुण नहीं है, यह केदार से पता चलता है।

सन् 1986 से 2013 तक, चौथाई सदी में, केदार पर शोध तो कई हुए, उनका प्रकाशन लगभग नहीं हुआ। स्वतंत्र पुस्तकें भी अपवाद रूप में ही आयीं। डॉ०

विश्वनाथ त्रिपाठी का निबंध 'पेड़ के हाथ' और सुश्री मधु छंदा का लघु शोध-प्रबंध, बस। शताब्दी के उपलक्ष्य में श्री विश्वरंजन ने 'बाँदा का जोगी' शीर्षक से आलोचनात्मक लेखों का एक वृहद संकलन सम्पादित किया है। पत्रिकाओं के विशेषांक ज़रूर आये हैं। संगोष्ठियाँ भी गिनी-चुनी हुई है।

उधर अज्ञेय पर सामग्री की कमी न पहले थी, न आज है। पत्रिकाओं के अंक भी ढेरों निकले हैं। संगोष्ठियों भी देश-विदेश मिलकर 200 से अधिक हुई हैं-ऐसा अज्ञेय प्रशंसकों का दावा है। फिर भी, भाषणों-वक्तव्यों में 'अज्ञेय' की उपेक्षा का दर्द इतना टीसता था कि दुःख की नदियाँ बह चलीं! अज्ञेय का उचित मूल्यांकन न होने से 'हिंदी के सामूहिक अविवेक' का पूरा परिचय मिल गया!

यह पूछना अनुचित न होगा कि डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी- डॉ० रघुवंश-विजय देव नारायण साही से लेकर निर्मल वर्मा-नंदकिशोर आचार्य-चंद्रकांत वान्दिवडेकर और अशोक वाजपेयी-ओम थानवी-मदन सोनी तक जो शताधिक विद्वानों ने अज्ञेय का मूल्यांकन किया, वह क्या अपर्याप्त है? क्या सिर्फ और सिर्फ अज्ञेय रह जाएँ, तब सही मूल्यांकन होगा? केदार पर मुश्किल से तीन-चार पुस्तकें उनकी उपेक्षा की सूचक नहीं हैं?

कहीं ऐसा तो नहीं कि अज्ञेय-प्रशंसकों की आलोचना उतनी विश्वसनीय न मालूम होती हो और यह लगता हो कि प्रगतिशील आलोचकों ने अज्ञेय पर पर्याप्त नहीं

लिखा? लेकिन प्रगतिशील आलोचना तो विचारधारा का उपनिवेश है शीतयुद्ध की राजनीति से ग्रस्त है, रेजिमेंटेशन का शिकार है! कैसा दिलचस्प संयोग है कि जो गैर-प्रगतिशील आलोचना इन सभी दोषों से मुक्त है, वह तो अज्ञेय-प्रतिष्ठा और केदार-उपेक्षा के रास्ते पर चलती है और प्रगतिशील आलोचना से माँग करती है कि वह उनके बनाये राजमार्ग का अनुसरण करे। आशा है, इसे राजनीति न कहते होंगे!

उनका यह हौसला दो कारणों से है। एक तो यह कि एकध्रुवीय भूमंडलीकृत संसार में प्रगतिशील शक्तियां शिथिल और असंगठित हैं, बाजारवादी शक्तियां आक्रामक और हावी है। दूसरा यह कि हिंदी के प्रगतिशील सांस्कृतिक संगठन और उनके नेता 'भूल-सुधार' के रास्ते पर चल पड़े हैं। सत्ताधारी संस्कृति का विरोध उनके लिए अप्रासंगिक हो गया है। वे साधारण लेखकों में सम्मान पाने और उन्हें ऊपर उठाने की जगह खुद चमक-दमक के मंचों पर जगमगाने का रास्ता अपना रहे हैं।

इस वातावरण में केदार का साहित्य लड़ने की और अपनी आस्था अडिग रखने की प्रेरणा देता है। इस संवाद में केदार ने बहुत-सी ऐसी बातें कही हैं, जो शोधार्थियों और साहित्य-प्रेमियों के ही नहीं, प्रगतिशील कार्यकर्ताओं और लेखकों के काम भी आएँगी। अंतिम दौर में उन्होंने एक कविता लिखी थी, ''परेशां घूमती फिरती है मेरी कविता क्रांति के प्रवाह का विश्वास लिए।'' *कवि-मित्रों* से दूर में उन्होंने कविता की ऊर्जा का सम्बन्ध जन-आन्दोलन से जोड़ा है।

आज हम देश में गैर-राजनीतिक जन-आंदोलनों की लहर देखते हैं। केदार उन आंदोलनों को परखने की और सामाजिक परिवर्तन के आन्दोलन में विश्वास जगाने की दृष्टि देते है। इसलिए उनकी यह वार्ता आज पहले से ज्यादा प्रासंगिक है। केवल ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में नहीं। एक जाग्रत विवेक के रूप में भी।

अस्तु।

अजय तिवारी, अशोक त्रिपाठी

नयी दिल्ली।

13 मई 2013